Diploma Programme
Programme du diplôme
Programa del Diploma

Hindi B – Standard level – Paper 1
Hindi B – Niveau moyen – Épreuve 1
Hindi B – Nivel medio – Prueba 1

Monday 8 May 2017 (afternoon)
Lundi 8 mai 2017 (après-midi)
Lunes 8 de mayo de 2017 (tarde)

1 h 30 m

Text booklet – Instructions to candidates

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for paper 1.
- Answer the questions in the question and answer booklet provided.

Livret de textes – Instructions destinées aux candidats

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

Cuaderno de textos – Instrucciones para los alumnos

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

2217–2259

© International Baccalaureate Organization 2017

International Baccalaureate®
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

https://xtremepape.rs/

पाठांश क

घर बैठे चला रहे हैं अपना “चैनल”

मुख्य रूप से मनोरंजन का साधन मानी जाने वाली यूट्यूब वेबसाइट का इस्तेमाल अब शिक्षा के प्रचार प्रसार में भी हो रहा है। खाना बनाना, संगीत से लेकर सिलाई कढ़ाई जैसी कुशलता के वीडियो जगतजाल (इंटरनेट) पर देखे जा सकते हैं। यूट्यूब के माध्यम से कुछ “शिक्षक” न सिर्फ़ आधारभूत शिक्षा दे रहे हैं बल्कि एक बेरोज़गार को रोज़गार भी दिला रहे हैं। ऐसा ही एक चैनल है “परीक्षा का बुखार” जिसे नीता शर्मा चलाती हैं और इस चैनल के 83 हज़ार प्रयोग करने वाले हैं। झारखंड के धनबाद ज़िले में पली-बढ़ी नीता शर्मा को बचपन से ही पढ़ाई से लगाव था।

लगभग हर दिन नीता इस चैनल पर दो वीडियो लगाती हैं। नीता अपने चैनल पर आने वाले छात्रों को विभिन्न विषयों के बारे में जानकारी देती हैं। नीता कहती हैं, “पढ़ाना मुझे पसंद है और सूचना विभाग में रहने के कारण मुझे पता था कि इंटरनेट के माध्यम से ही कुछ करना है। आप मेरे चैनल को ऑनलाईन कक्षा का नाम भी दे सकते हैं।” आर्थिक पहलू पर बात करते हुए नीता कहती हैं, “परीक्षा का बुखार मुझे बेहद पसंद है, हालांकि यह कारोबार नहीं है पर इसे चलाने के लिए भी लागत आती है। इसलिए मैंने आर्थिक मदद के लिए एक नया तरीका सोचा है।”

नीता शर्मा की ही तरह कोयंबटूर में रहने वाली शशिकला बचपन से ही चित्रकला और कारीगरी में दिलचस्पी रखती थी। पांच साल पहले उनके 16 वर्षीय बेटे ने उनको अपनी शिल्प कला को यूट्यूब चैनल में डालने के लिए प्रोत्साहन दिया। वह कहती हैं “मुझे तो कैमरा भी चलाना नहीं आता था। अब मैंने वीडियो की कांट-छांट (एडिटिंग़) करने वाले सॉफ्टवेयर को भी सीख लिया है और सारे वीडियो मैं खुद ही बनाकर जगतजाल (इंटरनेट) पर लगाती हूँ।”

शशिकला के चैनल के लगभग चालीस हज़ार प्रयोगकर्ता हैं। उनकी कोशिश रहती है कि वह हर हफ़्ते करीबन 2 वीडियो यूट्यूब पर जोड़ें। वह कहती हैं, “मुझे ख़ुशी है कि लोग इसका लाभ उठा रहे हैं। कितने लोग इन वीडियो को देखकर स्कूलों में कला सिखा रहे हैं।” 2012 में उनकी यूट्यूब के साथ साझेदारी हुई और कुछ पैसे मिलने भी शुरू हो गए हैं। उनके अधिकतर दर्शक जर्मनी, अर्जेंटीना से हैं जो अक्सर इस कला से जुड़े सवाल पूछते रहते हैं।

सुप्रिया सोगले, www.bbc.com/hindi (2015)

https://xtremepape.rs/

पाठांश ख

पत्रों का जादू

जहाँ तक पत्रों का सवाल है, आपको ऐसा कोई नहीं मिलेगा जिसने कभी किसी को पत्र न लिखा या पत्रों का बेसब्री से इंतजार न किया हो। हमारे सैनिक तो पत्रों का जिस उत्सुकता से इंतजार करते हैं, उसकी कोई मिसाल ही नहीं। एक दौर था जब लोग पत्रों का महीनों इंतजार करते थे पर अब वह बात नहीं। परिवहन साधनों के विकास ने दूरी बहुत घटा दी है। पहले लोगों के लिए संचार का इकलौता साधन चिट्ठी ही थी पर आज अन्य साधन विकसित हो चुके हैं।

आपको ऐसे लोग मिल जाएंगे जो अपने पुरखों की चिट्ठियों को सहेज और सँजोकर विरासत के रूप में रखते हों। फिर बड़े-बड़े लेखक, पत्रकार, उद्‌यमी, कवि, प्रशासक, संन्यासी या किसान इनकी पत्र रचनाएँ अपने आप में अनुसंधान का विषय हैं।

पत्रों को तो आप सहेजकर रख लेते हैं पर "एस.एम.एस." संदेशों को आप जल्दी ही भूल जाते हैं। कितने संदेशों को आप सहेजकर रख सकते हैं? सभी महान हस्तियों की तो सबसे बड़ी यादगार या धरोहर उनके द्‌वारा लिखे गए पत्र ही हैं। भारत में इस श्रेणी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को सबसे आगे रखा जा सकता है।

दुनिया के सभी संग्रहालय जानी मानी हस्तियों के पत्रों का अनूठा संकलन भी हैं। सभी पत्र देशकाल और समाज को जानने और समझने का असली पैमाना हैं। भारत में आज़ादी के पहले महासंग्राम के दिनों में जो कुछ अंग्रेज़ अफसरों ने अपने परिवारजनों को पत्र लिखे। ये आगे चलकर बहुत महत्त्व की पुस्तक बन गए। इन पत्रों ने साबित किया कि यह संग्राम कितनी ज़मीनी मज़बूती लिए हुए था।

अरविंद कुमार सिंह, www.books.google.co.uk (2008)

https://xtremepape.rs/

पाठांश ग

समझदारी से दूर करें रिश्तों के बीच गलतफहमी और दूरियां

❶ रिश्ते बर्फ के गोले की तरह होते हैं जिन्हें बनाना तो आसान है, लेकिन बनाए रखना काफी मुश्किल। अगर इंसान रिश्तों को निभाना सीख जाए तो सचमुच वह व्यक्ति दुनिया का सबसे मजबूत इंसान बन सकता है। रिश्तों को हम चार भागों में बांट सकते हैं। पहला, पारिवारिक रिश्ते, दूसरा सामाजिक रिश्ते, तीसरा, पेशेवर रिश्ते और चौथा, भावनात्मक रिश्ते। सबकी अपनी अहमियत होती है। पारिवारिक रिश्ते भले ही हमें जन्म से मिल जाते हों लेकिन उन्हें बनाए रखने के लिए निभाना ज्यादा जरूरी होता है।

❷ **शिवाली** मार्च 26, 2016

आज की भावनात्मक ज़रूरत मौजूदा दौर में एकल परिवारों और एक संतान की सोच ने भाई-बहनों को अकेला कर दिया है। पहले की तरह परिवार में रिश्तों का जमघट अब नज़र नहीं आता। ऐसे में उन रिश्तों की अहमियत बढ़ जाती है जो खून के न हों, जैसे दोस्ती, व्यापारिक या आस-पड़ोस के रिश्ते। ये रिश्ते बनते तो हमारी जरूरतों की वजह से हैं, लेकिन अगर हम इनमें प्रेम और अपनापन भी शामिल कर लें तो कोई हर्ज नहीं है। यह आज की भावनात्मक ज़रूरत बन चुके हैं।

❸ **अभषिक** मार्च 28, 2016

जुड़ाव जरूरत से ज्यादा न हो - रिश्ता चाहे पारिवारिक हो, सामाजिक, व्यावसायिक या भावनात्मक हो। हर रिश्ते के लिए हमें एक मर्यादा तय कर लेनी चाहिए। यह मर्यादा भी एकतरफा न होकर दोनों पक्षों को देखते हुए तय करनी चाहिए। इस लिहाज से इस रिश्ते में खुद को इतना ही डुबोएं जितने में तैरना आसान हो। मतलब रिश्तों में जुड़ाव उतना ही रखें जिसे आसानी से प्रेमपूर्वक निभा सकें।

❹ **नीलम चंद्रा** अप्रैल 4, 2016

कई बार हम सामने वाले के लिए ज्यादा झुकाव महसूस करते हैं, जबकि सामने वाला हमसे मिलने में कतराता है। ऐसे में हमें भी थोड़ी दूरी बना लेनी चाहिए। कई बार हम समझ नहीं पाते कि हम सामने वाले के लिए बोझ बन रहे हैं। ऐसे में थोड़ी सी दूरी रिश्तों की खोई गर्माहट वापस ला सकती है।

https://xtremepape.rs/

❺ **संदीप कुमार** अप्रैल 10, 2016

पैसा बड़ी परेशानी का कारण बन सकता है। वर्तमान में रिश्तों में तनाव का सबसे बड़ा कारण पैसा है। वक्त के हिसाब से महंगाई और ज़िम्मेदारी दोनों बढ़ी हैं, जबकि आमदनी उतनी ही है। ऐसे में अगर कोई और हमसे पैसों की उम्मीद रखता है तो हम उसे पूरी नहीं कर पाते। इसके लिए सबसे जरूरी है रिश्तों में एक दायरा तय कर लेना जिसमें स्पष्टता बहुत जरूरी कारक है।

भास्कर नेटवर्क, www.bhaskar.com (2016)

https://xtremepape.rs/

पाठांश घ

नुक्कड़ नाटक की वर्तमान स्थिति और भविष्य पर डॉ. प्रज्ञा से साक्षात्कार

[– X –]

डॉ. प्रज्ञा: नुक्कड़ नाटक जनांदोलनों से उपजी विधा है। आप अगर इसके इतिहास पर दृष्टि डालें तो आरंभिक नुक्कड़ नाटकों आम जनता के संघर्ष समस्याओं की कहानियाँ ही हैं। चाहे जन विरोधी सत्ता की अनीति हो, सत्ता का बेहतर विकल्प हो, श्रमशील जनता, मज़दूरों का शोषण और उनकी मज़दूरी से जुड़ा हुआ मुद्दा ही क्यों न हो। इस तरह नुक्कड़ नाटक एक राजनीतिक नाटक है और जनपक्षधर होना इसका मूल स्वभाव है।

[– 32 –]

डॉ. प्रज्ञा: जहाँ तक आज के संदर्भ में हम इस नाटक की बात करते हैं तो आज लगभग चौवालीस साल की अपनी यात्रा पूरी करने के बाद इसकी छवि जनपक्षीय ही है। हमारी रोज़मर्रा की तकलीफ़ों-स्वास्थ्य, पानी, बिजली, पोषण और महँगाई सभी मुद्दों पर नुक्कड़ नाटक लिखे-खेले जा रहे हैं। बीसवीं शताब्दी के आठवें दशक से आरंभ हुई नुक्कड़ नाटक की यात्रा से लेकर आज भी इसकी पहचान आंदोलनधर्मिता से ही जुड़ी हुई है।

[– 33 –]

डॉ. प्रज्ञा: नुक्कड़ नाटक जागरूकता के साथ बेहतर विकल्प की दिशा में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अपनी आरंभिक यात्रा में नाटक के क्षेत्र में कड़ी आलोचना का शिकार होने के बाद आज नुक्कड़ नाटक अपनी सशक्त पहचान बना चुका है। इस सकारात्मक प्रभाव के साथ नकारात्मक असर भी हुआ है। राजनीतिक रूप से जनवादी उद्देश्य को लेकर चलने वाले इस कला आंदोलन की लोकप्रियता को लोगों ने प्रभावित किया है। स्कूलों-कॉलेजों में इसकी ख्याति दिनों-दिन बढ़ रही है और अब व्यावसायिक हितों के लिए इसका इस्तेमाल हो रहा है। कई कंपनियाँ अपने सामान की बिक्री और प्रोमोशन के लिए नुक्कड़ नाटकों का इस्तेमाल कर रही हैं। पर इस तरह के कथ्यरहित, राजनीति और जनपक्षधरता रहित नाटक भीड़ को आकृष्ट करने के कलाहीन प्रयोग हैं जो न केवल नुक्कड़ नाटक के लिए घातक और ख़तरा हैं। ऐसा इस्तेमाल जनता के बीच इस विधा के उद्देश्य को लेकर एक बड़ा घाल-मेल पैदा करता है। कलाहीन क़िस्म के खोखले कथ्य के नाटक हैं वे।

ईशा भाटिया, www.sahityakunj.net (2016)

https://xtremepape.rs/